# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

You must have already been introduced to a study of basic microeconomics. This chapter begins by giving you a simplified account of how macroeconomics differs from the microeconomics that you have known

व्यष्टि अर्थशास्त्र के मूलभूत अध्ययन से आप अवश्य ही पूर्व परिचित होंगे। इस अध्याय के आरंभ में आपको व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र के बीच अंतर का एक सरलीकृत विवरण प्रस्तुत किया गया, जिससे आप परिचित होंगे।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Those of you who will choose later to specialise in economics, for your higher studies, will know about the more complex analyses that are used by economists to study macroeconomics today. But the basic questions of the study of macroeconomics would remain the same**

आप में से जो आगे चलकर उच्चतर अध्ययन में अर्थशास्त्र में विशिष्टता प्राप्त करने का चुनाव करेंगे, वे आज समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन में अर्थशास्त्रियों द्वारा उपयोग किए गए अधिक जटिल विश्लेषणों से अवगत होंगे। किंतु समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन के मूल प्रश्न वही रहेंगे।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

you will find that these are actually the broad economic questions that concern all citizens – Will the prices as a whole rise or come down? Is the employment condition of the country as a whole, or of some sectors of the economy, getting better or is it worsening?

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**What would be reasonable indicators to show that the economy is better or worse? What steps, if any, can the State take, or the people ask for, in order to improve the state of the economy? These are the kind of questions that make us think about the health of the country's economy as a whole.**

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**These questions are dealt within macroeconomics at different levels of complexity.**

समष्टि अर्थशास्त्र में इन प्रश्नों पर जटिलताओं के विभिन्न स्तरों पर विचार किया जाता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In this book you will be introduced to some of the basic principles of macroeconomic analysis. The principles will be stated, as far as possible, in simple language. Sometimes elementary algebra will be used in the treatment for introducing the reader to some rigour.**

इस पुस्तक में आपका परिचय समष्टि अर्थशास्त्रीय विश्लेषण के कुछ मूल सिद्धांतों से होगा। जहां तक संभव होगा सिद्धांतों का सरल भाषा में वर्णन किया जाएगा। कभी–कभी पाठकों को कुछ कठिनाइयों से परिचय करवाने के लिए प्रारंभिक बीजगणित का प्रयोग किया जाएगा।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In macroeconomics we usually simplify the analysis of how the country's total production and the level of employment are related to attributes (called 'variables') like prices, rate of interest, wage rates, profits and so on, by focusing on a single imaginary commodity and what happens to it..**

समष्टि अर्थशास्त्र में हमने सामान्यत: इस विश्लेषण को सरलीकृत किया है कि एकल काल्पनिक वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने पर कैसे देश का कुल उत्पादन तथा रोज़गार के स्तर का संबंध उन विशेषताओं (जिन्हें परिवर्ती कहते हैं) जैसे- कीमत, ब्याज दर, मज़दूरी दर, लाभ, इत्यादि से है तथा इससे क्या होता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**We are able to afford this simplification and thus usefully abstain from studying what happens to the many real commodities that actually are bought and sold in the market because we generally see that what happens to the prices, interests, wages and profits etc. for one commodity more or less also happens for the others.**

हम इसे सरलीकृत करने में सक्षम हैं और इस तरह उपयोगी तरीके से अध्ययन के द्वारा उसका सार प्राप्त करते हैं कि उन अधिसंख्य वास्तविक वस्तुओं के साथ क्या होता है, जो बाज़ार में खरीदी और बेची जाती हैं। क्योंकि सामान्यत: हम देखते हैं कि जो कीमत, ब्याज, मज़दूरी तथा लाभ, इत्यादि के साथ होता है, कमोबेश वही दूसरी वस्तुओं के साथ भी होता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Particularly, when these attributes start changing fast, like when prices are going up (in what is called an inflation), or employment and production levels are going down (heading for a depression), the general directions of the movements of these variables for all the individual commodities are usually of the same kind as are seen for the aggregates for the economy as a whole.**

खासतौर से जब इन गुणों में तेजी से बदलाव आना शुरू हो जाता है, उसी तरह जैसे कि कीमतें बढ़ती है ।(जिसे मुद्रास्फीति कहा जाता है) या रोज़गार तथा उत्पादन स्तर गिरते जाते हैं (जिसे मंदी कहा जाता है), इन परिवर्तों के संचालन की सामान्य दिशा, सभी व्यक्तिगत वस्तुओं के लिए सामान्यत: उसी प्रकार होती है, जैसे कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था के लिए समस्त रूप से दिखलाई पड़ती है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

## Economic Agents

**By economic units or economic agents, we mean those individuals or institutions which take economic decisions. They can be consumers who decide what and how much to consume. They may be producers of goods and services who decide what and how much to produce.**

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**They may be entities like the government, corporation, banks which also take different economic decisions like how much to spend, what interest rate to charge on the credits, how much to tax, etc**

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Macroeconomics tries to address situations facing the economy as a whole. Adam Smith, the founding father of modern economics, had suggested that if the buyers and sellers in each market take their decisions following only their own self-interest, economists will not need to think of the wealth and welfare of the country as a whole separately. But economists gradually discovered that they had to look further.**

समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थितियों को संबोधित करने का प्रयास किया जाता है। आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ ने भी यह सलाह दी है कि यदि प्रत्येक बाज़ार में क्रेता और विक्रेता अपने निजी हित को ध्यान में रखकर ही निर्णय लेंगे तो अर्थशास्त्रियों को संपूर्ण देश के धन और कल्याण के बारे में अलग से विचार करने की आवश्यकता नहीं होगी। किंतु, अर्थशास्त्रियों ने कालक्रम में यह अन्वेषण किया कि उन्हें आगे देखना होगा।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**For these purposes macroeconomists had to study the effects in the markets of taxation and other budgetary policies, and policies for bringing about changes in money supply, the rate of interest, wages, employment, and output. Macroeconomics has, therefore, deep roots in microeconomics because it has to study the aggregate effects of the forces of demand and supply in the markets..**

इन उद्देश्यों के लिए समष्टि अर्थशास्त्र के विद्वानों को करारोपन और अन्य बजट नीतियों और मुद्रा पूर्ति में बदलाव लाने वाली नीतियों, ब्याज दर, मज़दूरी, रोज़गार और निर्गत का बाज़ार में पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना पड़ता है। अतः समष्टि अर्थशास्त्र का मूल व्यष्टि अर्थशास्त्र में होता है। क्योंकि इसमें बाज़ार में माँग और पूर्ति की शक्तियों के समस्त प्रभावों का अध्ययन करना पड़ता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**However, in addition, it has to deal with policies aimed at also modifying these forces, if necessary, to follow choices made by society outside the markets. In a developing country like India such choices have to be made to remove or reduce unemployment, to improve access to education and primary health care for all, to provide for good administration, to provide sufficiently for the defence of the country and so on..**

यदि आवश्यक हुआ तो इन शक्तियों के परिवर्तन के लिए लक्षित नीतियों का भी प्रयोग करना पड़ता है। यह बाज़ार के बाहर समाज की रुचि का अनुकरण करने के लिए होता है। भारत जैसे विकासशील देश में इस प्रकार के चुनाव बेरोज़गारी को दूर अथवा कम करने के लिए, सभी नागरिकों के लिए शिक्षा और प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराने, सुशासन प्रदान करने, देश को समुचित प्रतिरक्षा आदि प्रदान करने के लिए इस प्रकार का चयन करना पड़ता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Macroeconomics shows two simple characteristics that are evident in dealing with the situations we have just listed. These are briefly mentioned below.**

समष्टि अर्थशास्त्र की दो सामान्य विशेषताएँ हैं, जो उपर्युक्त सूची की स्थितियों में प्रयोग करना स्पष्ट है। संक्षेप में, इनका उल्लेख नीचे किया गया है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**First, who are the macroeconomic decision makers (or 'players')? Macroeconomic policies are pursued by the State itself or statutory bodies like the Reserve Bank of India (RBI), Securities and Exchange Board of India (SEBI) and similar institutions. Typically, each such body will have one or more public goals to pursue as defined by law or the Constitution of India itself.**

प्रथम, समष्टि अर्थशास्त्र में निर्णयकर्ता अथवा ("आर्थिक भूमिका अदा करने वाले") कौन होते हैं? समष्टि अर्थशास्त्रीय नीतियों का अनुपालन राज्य स्वयं अथवा वैधानिक निकाय जैसे भारतीय रिज़र्व बैंक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड और इसी प्रकार की संस्था करते हैं। विधि अथवा भारत के संविधान में जैसाकि परिभाषित की गई है कि एसे प्रत्येक निकाय को एक अथवा अधिक सार्वजनिक लक्ष्य का अनुपालन करना होगा।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

## EMERGENCE OF MACROECONOMICS

**Macroeconomics, as a separate branch of economics, emerged after the British economist John Maynard Keynes published his celebrated book The General Theory of Employment, Interest and Money in 1936.**

## समष्टि अर्थशास्त्र का उद्भव

समष्टि अर्थशास्त्र का एक अलग शाखा के रूप में उद्भव ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स की प्रसिद्ध पुस्तक द जनरल थ्यारी ऑफ इम्प्लॉयमेन्ट, इन्टरेस्ट एंड मनी के 1936 ई. में प्रकाशित होने के बाद हुआ।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

## EMERGENCE OF MACROECONOMICS

**The dominant thinking in economics before Keynes was that all the labourers who are ready to work will find employment and all the factories will be working at their full capacity. This school of thought is known as the classical tradition.**

## समष्टि अर्थशास्त्र का उद्भव

कीन्स से पहले अर्थशास्त्र में इस चिंतन का प्राबल्य था कि सारे श्रमिक जो काम करने के इच्छुक हैं, उन्हें काम मिलेगा और सारे कारखाने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करते रहेंगे। विचारों के इस संप्रदाय को क्लासिकी परंपरा के रूप में जाना जाता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**However, the Great Depression of 1929 and the subsequent years saw the output and employment levels in the countries of Europe and North America fall by huge amounts. It affected other countries of the world as well. Demand for goods in the market was low, many factories were lying idle, workers were thrown out of jobs.**

किंतु, 1929 की महामंदी और उसके बाद के वर्षों में देखा गया कि यूरोप और उत्तरी अमरीका के देशों में निर्गत और रोज़गार के स्तरों में भारी गिरावट आयी। इसका प्रभाव दुनिया के अन्य देशों पर भी पड़ा। बाज़ार में वस्तुओं की माँग कम थी और कई कारखाने बेकार पड़े थे, श्रमिकों को काम से निकाल दिया गया था।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In USA, from 1929 to 1933, unemployment rate rose from 3 per cent to 25 per cent (unemployment rate may be defined as the number of people who are not working and are looking for jobs divided by the total number of people who are working or looking for jobs). Over the same period aggregate output in USA fell by about 33 per cent**

संयुक्त राज्य अमरीका में 1929 से 1933 तक बेरोज़गारी की दर 3 प्रतिशत से बढ़कर 25 प्रतिशत (बेरोज़गारी की दर की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है कि लोगों की संख्या जो काम करने के इच्छुक हैं किंतु काम नहीं करते हैं, में लोगों की कुल संख्या जो काम करने के इच्छुक हैं और काम करते हैं, से भाग देकर जो भागफल प्राप्त होता है, उस रूप में प्राप्त की जाती है)। उस अवधि के दौरान संयुक्त राज्य अमरीका में समस्त निर्गत में लगभग 33 प्रतिशत की गिरावट आयी।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**These events made economists think about the functioning of the economy in a new way. The fact that the economy may have long lasting unemployment had to be theorised about and explained. Keynes' book was an attempt in this direction. Unlike his predecessors, his approach was to examine the working of the economy in its entirety and examine the interdependence of the different sectors. The subject of macroeconomics was born.**

इन घटनाओं ने अर्थशास्त्रियों को नये तरीके से अर्थव्यवस्था के प्रकार्य के संबंध में सोचने को प्रेरित किया। यह सच है कि जिस अर्थव्यवस्था में बेरोज़गारी लंबी अवधि तक विद्यमान होगी, वहां एक सिद्धांत की प्रस्तुति और उसकी व्याख्या की आवश्यकता होगी। कीन्स की पुस्तक इस दिशा में एक प्रयास साबित हुई। अपने पूर्ववर्तियों के विपरीत उनका दृष्टिकोण अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली तथा विभिन्न क्षेत्रों की परस्पर–निर्भरता का परीक्षण करना था। समष्टि अर्थशास्त्र जैसे विषय का उद्भव हुआ।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In a capitalist country production activities are mainly carried out by capitalist enterprises. A typical capitalist enterprise has one or several entrepreneurs (people who exercise control over major decisions and bear a large part of the risk associated with the firm/enterprise). They may themselves supply the capital needed to run the enterprise, or they may borrow the capital.**

पूँजीवादी देश में उत्पादन क्रियाकलाप मुख्य रूप से पूँजीवादी उद्यमियों के द्वारा किये जाते हैं। किसी विशिष्ट पूँजीवादी उद्यम में एक या अनेक उद्यमी (उद्यमी एसे लोग हैं जो बड़े निर्णयों के नियंत्रण का कार्य करते हैं तथा फर्म या उद्यम के साथ जुड़े बड़े जोखिम का वहन करते हैं) होते हैं। वे उद्यम को चलाने के लिए स्वयं पूँजी की पूर्ति करते हैं या वे पूँजी उधार लेते हैं।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**To carry out production they also need natural resources – a part consumed in the process of production (e.g. raw materials) and a part fixed (e.g. plots of land). And they need the most important element of human labour to carry out production. This we shall refer to as labour. After producing output with the help of these three factors of production, namely capital, land and labour, the entrepreneur sells the product in the market.**

उत्पादन के संचालन के लिए उन्हें प्राकृतिक संसाधनों की भी आवश्यकता पड़ती है। इनमें कुछ संसाधनों का उपयोग उत्पादन की प्रक्रिया में होता है (जैसे–कच्चे माल) तथा कुछ तो स्थायी पूँजी के रूप में रहता है (जैसे–भूखंड)। उत्पादन के संचालन के लिए उन्हें मानव श्रम के महत्त्वपूर्ण अंश की आवश्यकता होती है, जिसे हम श्रम के रूप में सूचित करेंगे। इन तीन प्रकार के उत्पादन के कारकों, जैसे–पूँजी, भूमि, श्रम की सहायता से निर्गत का उत्पादन करने के बाद उद्यमी उत्पाद को बाज़ार में बेचते हैं।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**The money that is earned is called revenue. Part of the revenue is paid out as rent for the service rendered by land, part of it is paid to capital as interest and part of it goes to labour as wages. The rest of the revenue is the earning of the entrepreneurs and it is called profit.**

इससे प्राप्त मुद्रा को संप्राप्ति कहते हैं। इस संप्राप्ति का कुछ अंश भूमि को उसके उपयोग के लिए अधिशेष के रूप में प्रदान किया जाता है, इसी प्रकार कुछ अंश पूँजी को ब्याज के रूप में तथा कुछ श्रम की मज़दूरी के रूप में प्रदान किया जाता है। शेष संप्राप्ति को उद्यमी की आय कहते हैं जो लाभ कहलाता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Profits are often used by the producers in the next period to buy new machinery or to build new factories, so that production can be expanded. These expenses which raise productive capacity are examples of investment expenditure.**

इस लाभ का उपयोग उत्पादक आगे नयी मशीन खरीदने अथवा नये कारखाने लगाने के लिए करते हैं ताकि उत्पादन का विस्तार हो। उत्पादन क्षमता में वृद्धि लाने के लिए जो व्यय किया जाता है, उसे निवेश व्यय कहते हैं।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**a capitalist economy can be defined as an economy in which most of the economic activities have the following characteristics**

**(a) there is private ownership of means of production**

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है– वह अर्थव्यवस्था जिसमें अधिकांश आर्थिक क्रियाकलापों के निम्नलिखित अभिलक्षण हों–

(अ) उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

(b) production takes place for selling the output in the market

(c) there is sale and purchase of labour services at a price which is called the wage rate (the labour which is sold and purchased against wages is referred to as wage labour)

(ब) बाज़ार में निर्गत को बेचने के लिए ही उत्पादन किया जाता है

(स) श्रमिकों की सेवाओं का क्रय-विक्रय एक निश्चित कीमत पर होता है, जिसे मज़दूरी की दर कहते हैं (श्रम का क्रय-विक्रय जिस दर पर किया जाता हॅ, उसे श्रमिक की मज़दूरी दर कहते हैं)।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In many underdeveloped countries production (in agriculture especially) is carried out by peasant families. Wage labour is seldom used and most of the labour is performed by the family members themselves. Production is not solely for the market; a great part of it is consumed by the family. Neither do many peasant farms experience significant rise in capital stock over time.**

कई अल्पविकसित देशों में (खास करके कृषि में) उत्पादन का कार्य किसान परिवारों के द्वारा किया जाता है। मज़दूरी श्रम का प्रयोग कभी–कभार होता है और अधिकतर श्रम कार्य परिवार के सदस्य स्वयं करते हैं। उत्पादन केवल बाज़ार के लिए नहीं होता है, उत्पादन का एक बड़ा अंश परिवार के द्वारा उपभोग में लाया जाता है। प्राय: किसानों के पूँजी स्टॉक में कोई महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं होती है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In many tribal societies the ownership of land does not exist; the land may belong to the whole tribe. In such societies the analysis that we shall present in this book will not be applicable. It is, however, true that many developing countries have a significant presence of production units which are organised according to capitalist principles. The production units will be called firms in this book.**

अधिसंख्य आदिवासी समाज में भूमि का स्वामित्व नहीं होता है। भूमि का स्वामित्व समस्त जनजाती के पास हो सकता है। हमने इस पुस्तक में जो विश्लेषण प्रस्तुत किया है, वह एसे समाजों पर लागू नहीं होता है। किंतु यह सच है कि अनेक विकासशील देशों में जो उत्पादन की इकाइयां मौजूद हैं, वह पूँजीवादी सिद्धांतों के अनुरूप हैं। इस पुस्तक में उत्पादन इकाइयों को फर्म कहा गया है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In a firm the entrepreneur (or entrepreneurs) is at the helm of affairs. She hires wage labour from the market, she employs the services of capital and land as well. After hiring these inputs she undertakes the task of production. Her motive for producing goods and services (referred to as output) is to sell them in the market and earn profits.**

किसी फर्म के कारोबार के संचालन का दायित्व उद्यमियों के ऊपर होता है। उद्यमी ही बाज़ार से श्रमिकों को किराये पर लाकर अपने उत्पादन प्रक्रम में नियोजित करता है। इसी प्रकार वह भूमि एवं पूँजी का भी नियोजन करता है। इन आगतों के नियोजन के उपरांत उद्यमी उत्पादन प्रक्रिया का संचालन करता है। उनका उद्देश्य वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन कर (जिसे निर्गत कहा जाता है) बाज़ार में उनको बेचना और उससे लाभ प्राप्त करना होता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In the process she undertakes risks and uncertainties. For example, she may not get a high enough price for the goods she is producing; this may lead to fall in the profits that she earns. It is to be noted that in a capitalist country the factors of production earn their incomes through the process of production and sale of the resultant output in the market.**

इस प्रक्रिया में उसे जोखिम एवं अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, वह जिन वस्तुओं का उत्पादन करता है, वह ऊँची कीमत पर नहीं बिक पाती हैं। इससे उद्यमी के लाभ में कमी होती है। ध्यान देने की बात है कि पूँजीवादी देशों में उत्पादन के कारक अपनी आय का सृजन उत्पादन की प्रक्रिया एवं उससे प्राप्त निर्गत को बाज़ार में बेचकर करते हैं।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In both the developed and developing countries, apart from the private capitalist sector, there is the institution of State. The role of the state includes framing laws, enforcing them and delivering justice.**

वकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार के देशों में निजी पूँजीवादी क्षेत्र के अलावा राज्य में उसके अनुरूप एक संस्था होती है। राज्य की भूमिका कानून बनाने, उसे लागू करने और न्याय दिलाने में होती है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In both the developed and developing countries, apart from the private capitalist sector, there is the institution of State. The role of the state includes framing laws, enforcing them and delivering justice.**

वकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार के देशों में निजी पूँजीवादी क्षेत्र के अलावा राज्य में उसके अनुरूप एक संस्था होती है। राज्य की भूमिका कानून बनाने, उसे लागू करने और न्याय दिलाने में होती है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**These economic functions of the state have to be taken into account when we want to describe the economy of the country. For convenience we shall use the term "Government" to denote state**

जब हम किसी देश की अर्थव्यवस्था का वर्णन करें, तो राज्य के इन आर्थिक प्रकायों का उल्लेख करना आवश्यक है। राज्य को सूचित करने के लिए सुविधा की दृष्टि से हम आगे सरकार शब्द का प्रयोग करेंगे।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Apart from the firms and the government, there is another major sector in an economy which is called the household sector. By a household we mean a single individual who takes decisions relating to her own consumption, or a group of individuals for whom decisions relating to consumption are jointly determined. Households also save and pay taxes.**

किसी अर्थव्यवस्था में फर्म और सरकार के अतिरिक्त दूसरा जो बड़ा क्षेत्र होता है, उसे पारिवारिक क्षेत्रक कहते हैं। यहां परिवार से हमारा तात्पर्य एकल व्यक्तिगत उपभोक्ता, जो अपने उपभोग से संबंधित निर्णय अथवा कई व्यक्तियों के समूह जिसके उपभोग संबंधित निर्णय संयुक्त रूप से लिए जाते हैं, से है। परिवार भी बचत करते हैं और कर अदा करते हैं।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**So far we have described the major players in the domestic economy. But all the countries of the world are also engaged in external trade. The external sector is the fourth important sector in our study. Trade with the external sector can be of two kinds**

अभी तक हमने देशीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटकों का उल्लेख किया है। लेकिन विश्व के सारे देश बाह्य व्यापार भी करते हैं। बाह्य क्षेत्र, हमारे अध्ययन का चौथा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। बाह्य क्षेत्र से व्यापार तीन प्रकार से हो सकता है

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

1. **The domestic country may sell goods to the rest of the world. These are called exports.**
2. **The economy may also buy goods from the rest of the world. These are called imports. Besides exports and imports, the rest of the world affects the domestic economy in other ways as well.**

1. जब कोई देश अपनी घरेलू वस्तु विश्व के अन्य देशों में बेचते हैं, तो उसे निर्यात कहते हैं।

2. कोई देश जब विश्व के अन्य देशों से वस्तुएँ खरीदता है, तो उसे आयात कहते हैं। आयात और निर्यात के आलावा दूसरी तरह से भी विश्व के अन्य देश किसी देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**3. Capital from foreign countries may flow into the domestic country, or the domestic country may be exporting capital to foreign countries**

3. किसी देश की अर्थव्यवस्था में विदेशी पूँजी का भी प्रवाह हो सकता है अथवा कोई देश विदेशों में भी पूँजी का निर्यात कर सकता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Macroeconomics deals with the aggregate economic variables of an economy. It also takes into account various interlinkages which may exist between the different sectors of an economy. This is what distinguishes it from microeconomics; which mostly examines the functioning of the particular sectors of the economy, assuming that the rest of the economy remains the same.**

समष्टि अर्थशास्त्र में किसी अर्थव्यवस्था के समस्त आर्थिक परिवर्तों पर विचार किया जाता है। इसमें उन विविध अंतर–सहलग्नताओं की भी चर्चा है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रकों में विद्यमान रहती हैं। इन्हीं कारणों से यह व्यष्टि अर्थशास्त्र से भिन्न होता है; जिसमें किसी अर्थव्यवस्था के खास क्षेत्रक में कार्यप्रणाली का परीक्षण किया जाता है और अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रकों को एक समान मान लिया जाता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**Macroeconomics emerged as a separate subject in the 1930s due to Keynes. The Great Depression, which dealt a blow to the economies of developed countries, had provided Keynes with the inspiration for his writings.**

समष्टि अर्थशास्त्र का उद्भव एक पृथक विषय के रूप में 1930 में कीन्स के कारण हुआ। महामंदी से विकसित देशों को गहरा धक्का लगा और कीन्स को अपनी पुस्तक लिखने की प्रेरणा मिली।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In this book we shall mostly deal with the working of a capitalist economy. Hence it may not be entirely able to capture the functioning of a developing country. Macroeconomics sees an economy as a combination of four sectors, namely households, firms, government and external sector.**

इस पुस्तक में हम प्राय: पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली का ही अध्ययन करेंगे। अत: इसमें विकासशील देशों की कार्यप्रणाली को पूर्ण रूप से शामिल करना संभव नहीं होगा। समष्टि अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था को परिवार, फर्म, सरकार और बाह्य क्षेत्रक इन चार क्षेत्रकों के संयोग के रूप में देखा जाता है।

# INTRODUCTION OF MACRO ECONOMICS

**In this book we shall mostly deal with the working of a capitalist economy. Hence it may not be entirely able to capture the functioning of a developing country. Macroeconomics sees an economy as a combination of four sectors, namely households, firms, government and external sector.**

इस पुस्तक में हम प्रायः पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली का ही अध्ययन करेंगे। अतः इसमें विकासशील देशों की कार्यप्रणाली को पूर्ण रूप से शामिल करना संभव नहीं होगा। समष्टि अर्थशास्त्र में अर्थव्यवस्था को परिवार, फर्म, सरकार और बाह्य क्षेत्रक इन चार क्षेत्रकों के संयोग के रूप में देखा जाता है।